फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

# बात एक रोज की

– केशव राणा

**प्रार्थना का समय हो रहा था। बच्चे कम आये थे इसलिए प्रभारी मैडम थोड़ी चिंतित सी दिख रही थीं। कुछ देर इंतजार किया लेकिन कोई फायदा न हुआ। बच्चों के अलावा 'बड़ों' में सिर्फ हम ही दो लोग थे, प्रभारी मैडम और मैं। देर हो रही थी तो तय हुआ कि हम लोग ही प्रार्थना शुरू कराते हैं। सभी छात्रों को प्रार्थना–स्थल पर इकठ्ठा होने को कहा गया।**

प्रार्थना का समय हो रहा था। बच्चे कम आये थे इसलिए प्रभारी मैडम थोड़ी चिंतित सी दिख रही थीं। कुछ देर इंतजार किया लेकिन कोई फायदा न हुआ। बच्चों के अलावा 'बड़ों' में सिर्फ हम ही दो लोग थे। प्रभारी मैडम और मैं। देर हो रही थी तो तय हुआ कि हम लोग ही प्रार्थना शुरू कराते हैं। सभी छात्रों को प्रार्थना–स्थल पर इक्ट्ठा होने को कहा गया। खेलते–कूदते, ऊधम मचाते बच्चे एकदम अल्हड़ पहाड़ी नदी की तरह उफान मार रहे थे, किसी का कोई ओर–छोर नहीं।

हर बच्चा खुद में नदियों की मुकम्मल तासीर लिए सुबह के सूरज को अपने आगोश में लेने को आतुर था। प्रार्थना करते बच्चों के स्वर सूरज की गर्मी को बराबरी की टक्कर दे रहे थे। यह एक ऐसी प्रार्थना थी जिसमें 'राम', 'रहीम' और 'गुरुनानक' सभी को याद किया गया। पता नहीं यह उनके ऊंचे स्वर का असर था या इत्तफाक। प्रार्थना समाप्त होते–होते बच्चों की संख्या बढ़ गयी और प्रभारी मैडम के माथे पर खिंच आयी चिंता की लकीरें मद्धम पड़ने लगीं। हर रोज की तरह आज भी बच्चों ने प्रार्थना के बाद 'नैतिक' शपथ ली। जाहिर तौर पर उसमें 'राष्ट्र भक्ति' और एक–दूसरे को भाई–बहन मानने जैसी शपथ भी शामिल ही थी। इन सभी गतिविधियों में बच्चों की उपस्थिति और स्वर में भले ही कोई बहुत ज्यादा तब्दीली न हो रही हो लेकिन उनके हाथों की मुद्रा हर बार बदल जा रही थी। जैसे– प्रार्थना के समय दोनों हथेलियां सीने पर आगे की तरफ जुड़े हुए हाथ। शपथ लेते हुए बायां हाथ सावधान की मुद्रा में, दाहिना हाथ सामने की ओर खुला हुआ, हथेली का रुख धरती की ओर। 'सारे जहां से अच्छा' गाते हुए दोनों हाथ सामने की ओर बंधे हुए और राष्ट्रगान गाते हुए सभी निश्चित रूप से सावधान की मुद्रा में थे। प्रार्थना–सभा के अंत में सबसे अच्छे तरीके से 'ड्रेसअप' होकर आए एक छात्र और एक छात्रा को सामने बुलाया गया। इन दोनों बच्चों के पहनावे की तारीफ की गयी। फिर एक खास लय में बाकी बच्चों ने इनके लिए तालियां बजायीं। संभवतः यह प्रयास था सभी बच्चों में एक तरह की 'यूनिफॉर्मिटी' लाने का।

मैं बदलती मुद्राओं के बारे में सोच रहा था कि इसी बीच धीरे–धीरे अन्य शिक्षक–शिक्षिकायें भी स्कूल आ गए। अब प्रभारी मैडम के माथे से चिंता की लकीरें पूरी तरह मिट चुकी थीं। पूरे स्कूल की सफाई का जिम्मा आज कक्षा सात का था। देखते ही देखते कक्षा सात के हर

बच्चे के हाथ में झाड़ू थी। छोटे–छोटे हाथों में बड़ी–छोटी झाड़ू...झर–झर...झाड़–झाड़...इधर छूट गया... छोटे–छोटे हाथों में उठी छोटी–बड़ी झाड़ू से स्कूल 'साफ' हो रहा था। थोड़ी ही देर में स्कूल साफ हो गया।

साफ–सफाई के बाद अभी पौधारोपण का कार्यक्रम बचा था। आज विज्ञान वाली मैडम अपने साथ कुछ पौधे लेकर आयी थीं। आठ–दस फूल के पौधे और आठ–दस शो–प्लांट। पौधारोपण किसी खास कक्षा की जिम्मेदारी नहीं थी। सब ने मिलजुल कर जगह–जगह शिक्षकों के निर्देशन में पौधे लगाये। स्कूल में हर कक्षा की क्यारियां बंटी हुई हैं। सबको अपनी–अपनी क्यारी सुन्दर बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता रहा। जिसकी क्यारी ज्यादा सुन्दर लगती शिक्षक–शिक्षिका उस कक्षा की तारीफ भी कर रहे थे। पौधे रोपने के लिए खुरपी और कुदाल जमीन में धंसकर गीली जमीन से मिट्टी बाहर निकाल रहे थे। नए पौधे रोपे जा रहे थे। कहीं 'शो–प्लांट' कहीं फूल वाले पौधे।

अब कक्षा–कक्ष में पढ़ाई की बारी थी। कक्षा 6, 7 और 8 तीनों के ही बच्चे अब अपनी–अपनी कक्षा में थे। हलचल थम गयी थी। सब शांत, केवल हाजिरी लगाये जाने का स्वर। एक नाम और उसके बाद 'यस मैडम'। विज्ञान, गणित और अंग्रेजी की कक्षाएं चल रही थीं। हाजिरी के बाद गणित की मैडम कुछ सवाल हल कराने की कोशिश कर रही थीं। विज्ञान वाली मैडम पर्यावरण में मीथेन गैस से सम्बंधित बातें बता रही थीं और अंग्रेजी वाली मैडम बच्चों के साथ शब्दार्थ पर काम कर रही थी। शब्दार्थ के लिए उन्होंने श्यामपट पर अंग्रेजी के शब्दों को लिख दिया था। मैडम जी एक–एक शब्द का अर्थ हिंदी में बता रही थीं जिसे सभी बच्चों को अपनी–अपनी कॉपी में इंगित शब्द के आगे लिखना था।

दस बज गए थे। बच्चों के भोजन का समय हो चला था। घंटी बजी, दरियां बिछ गयीं, अपनी–अपनी प्लेट झनझनाते बच्चे कतारबद्ध बैठ गए। भोजन के बाद भी भोजनावकाश का वक्त अभी शेष था। प्रभारी मैडम इस समय का सदुपयोग करना चाहती थीं। विद्यालय परिसर में एक तरफ आम के पेड़ की एक काफी बड़ी सी डाली टूटी पड़ी थी। प्रभारी मैडम के निर्देश पर अब बच्चों के हाथ में कुल्हाड़ी, हंसिया, दराती और दाव जैसे हथियार थे। स्कूल के सारे लड़के उस गिरी हुई डाल को काटने–छांटने में मुस्तैद। जाहिर तौर पर लड़कियों को इस 'गतिविधि' से दूर ही रखा गया था। अंग्रेजी वाली

फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

मैडम को बहुत सारे तुलसी के पत्तों की जरूरत थी। उनकी सलाह पर लड़कियों को तुलसी के पत्ते तोड़ने पर लगा लिया गया।

लड़कों में एक प्रतियोगिता सी चल रही थी। कौन सबसे ज्यादा लकड़ी काटता है। लकड़ियां दनादन कट रही थीं कि तभी एक जब्बर सी गांठ लड़कों के सामने चुनौती बनकर खड़ी हो गयी। हुँह...हुँह...हुँह... कुल्हाड़ी आसमान

की ओर उठती और सनसनाते हुए गांठ से जा टकराती। लेकिन काटना तो दूर गाँठ को छील भी नहीं पाती। अब स्कूल के सबसे बलवान बालक की ओर सबकी निगाहें टिक गयीं। उस बालक का नाम भीम था। वो दूर खड़ा अपनी कुल्हाड़ी को निहार रहा था। प्रभारी मैडम ने कहा–'अरे भीम! वहां क्या देख रहे हो। इधर आओ' भीम काफी देर से उस गांठ को देख रहा था। जैसे मामले को समझकर भी खुद को बुलाये जाने का इंतजार कर रहा था। जब उसे बुलाया गया तो उसकी आंखों में एक गर्वीली मुस्कान थी। भीम की कुल्हाड़ी आसमान छूती हुई पीछे की ओर गई और बिजली की तरह गांठ पर गिरी। लेकिन गांठ तो जैसे न खुलने की कसम खाकर बैठी हुई थी। भीम के इस असफल प्रयास पर कुछ बच्चों को हंसी आ गयी। मैडम लोगों ने भी कहा कि जाने दो इसको बाद में देखेंगे। किसी बड़े आदमी को बुलवाकर कटवा लेंगे। भीम को यह सब ठीक नहीं लग रहा था। उसकी आँखें लगातार गांठ को घूरे जा रहीं थीं। ऐसा लग रहा था कि वह अपनी आँखों से ही गांठ को चीर डालेगा। सब लोग अभी कुछ सोच ही रहे थे कि भीम की कुल्हाड़ी ने गांठ पर घातों की बौछार कर दी...ठक..ठक...हुँह..हुँह... लगातार कम से कम 14–15 बार के प्रहार से गांठ जैसे घबरा गई और उसने कुल्हाड़ी के लिए रास्ते खोल दिए। दम साधे देखती हुई भीड़(हमसब इस दरम्यान भीड़ में बदल गए थे) चहक उठी। भीम तो भीम ही है– किसी मैडम ने कहा। गांठ को चीरने के बाद भीम जब रुका तो वह पसीने से तर–ब–तर था। उसकी गर्वीली आँखें गाँठ को अभी भी रह–रह के देख रही थीं। इस देखने में एक खुशी थी। इस पूरे घटनाक्रम में न जाने कितनी बार प्रेमचंद और उनकी 'सद्गति' मुझमें से होकर गुजर गए।

इसी बीच प्रभारी मैडम आज भी किसी मीटिंग के लिए चली गयीं। बच्चे अब बड़ी सी डाल के छोटे–छोटे टुकड़ों को भोजन माताओं के कक्ष के पास रख रहे थे। सभी मैडम लोगों ने बच्चों को कुछ–कुछ कक्षा–कार्य दे दिया। खुद कॉपियां चेक करने लगीं। आज हिंदी वाली मैडम नहीं आयी थीं। इसलिए हिंदी की कोई कक्षा नहीं चली। बच्चे शोर मचा रहे थे इसलिए मैडम लोगों ने बरामदे में आकर कॉपी चेक करना ठीक समझा जिससे कि बच्चों पर भी नजर रखी जा सके।

धीरे–धीरे कक्षा–विसर्जन का समय हो चला था। कक्षा विसर्जन की औपचारिकता पूरी हुई और परम्परा के अनुसार पहले लड़कियों की पंक्ति फिर लड़कों की पंक्ति स्कूल से अपने–अपने घर को निकल पड़ी।

*(लेखक, राजकीय आदर्श विद्यालय (पीएसी) रुद्रपुर में अध्यापक हैं)*

# फूल

**धूल उड़े या आँधी आवे,**
**जल बरसे या धूप सतावे।**
**या डाली से तोड़ा जाऊँ,**
**मसला और मरोड़ा जाऊँ।**
**कभी न भय खाऊँगा मन में,**
**मैल न लाऊँगा जीवन में।**
**मरते दम तक मुस्काऊँगा,**
**महक मनोहर फैलाऊँगा।**

**- श्रीनाथ सिंह**